GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 2
March - April: 2026

साठोत्तरी उपन्यासों मे बदलते स्त्री-पुरूष प्रेम संबंध

(मृदुला सिन्हा के अतिशय उपन्यास के संदर्भ में)

प्रा. विजयादेवी श्रीकांत घोरपडे,

शिवराज कॉलेज, त. गडहिंग्लज,

जि. कोल्हापूर, पिन : 416502.

मो. 8623853830

सन 1960 के उपरांत लिखे उपन्यासों को 'साठोत्तरी उपन्यास' के तहत स्थान दिया जाता है। इन उपन्यासों में आदर्शवाद की उपेक्षा यथार्थवाद पर बल दिय गया है। इस काल में उपन्यासों में समकालीन अथार्थ को बडी इमानदारी से प्रस्तुत किया गया है। मन्नू भंडारी, उषा प्रियवंदा, निरुपमा सोबती, मंजुला भगत, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, मालती जोशी आदि कुछ साठोत्तरी महिला उपन्यासकार हैं। इन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री पुरूष प्रेमसंबंधों के बारे में अपने विचार व्यक्त किए है। उनमें से एक नाम है मृदुला सिन्हा।

हिंदी साहित्य में वास्तववादी रचनाकार के रूप में मृदुला सिन्हा को विशेष महत्व प्राप्त है। उनका जन्म सन 1942 ई. में मुजफ्फरपुर जिला (बिहार) के छपरा नामक गाँव में हुआ। उन्होंने अलग अलग साहित्यिक विधाओं में सृजनात्मक लेखन किया है। मृदुला सिन्हा ने ज्यों मेहंदी को रंग (1981), घरवास (1992), अतिशय (2003), सीता पुनि बोली (2010) आदि उपन्यासों की रचना की है। उनके द्वारा रचित बिहार की लोक कथाएँ दो खंडों में प्रकाशित हैं। साथ ही साथ उन्होंने विविध लेख भी लिखे हैं। वे एक सफल राजनीतिज्ञ भी है। उनके कथा-साहित्य में नारी के विविध रूप, वर्तमान जीवन से जुडी अनेक समस्याएँ तथा अपने परिवेश आदि का मानवीय संबंधों पर होने वाले परिणामों को चित्रित किया है। उनके 'अतिशय' उपन्यास में प्रेम संबंधों से मानवी जीवन किस प्रकार प्रभावित होता है इसका चित्रण किया है।

प्रेम संबंध :

'प्रेम' संसार की पवित्र भावना मानी जाती है। "प्रेम मानव जीवन की स्वाभविक इच्छा है। सभी को उसे पाने का पूर्ण अधिकार भी हैं।"[1] प्रेमी प्रेमिका का पवित्र प्रेम संबंध तो आत्मा और परमात्मा का संबंध माना जाता है। दोनों के परस्पर प्रेम की परिणती अगर विवाह में होती है तो उसे सफल प्रेम कहा जाता है। अगर किसी कारणवश दोनों का विवाह नहीं हो पाता तो उसे विफल प्रेम कहा जाता है। कबीर के मतानुसार तो "दो प्यार करनेवालों के बीच ईश्वर की ज्योती का निवास होता है।"[2] त्यागमय प्रेम सर्वश्रेष्ठ प्रेम माना जाता है। मगर

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 2
March - April: 2026

वर्तमान युग में हर तरिके से प्रेम की प्राप्ति को महत्व प्रदान किया जा रहा है। कभी कभी वैवाहिक जीवन में सामंजस्य के अभाव के कारण वैवाहिक जीवन बोझ लगने लगता है और इस बोझ के उतार फेंकने के लिए विवाहित व्यक्ति अपने जीवनसाथी को छोडकर दुसरे व्यक्ति से प्यार करते दिखाई देते हैं। लेकिन इससे जीवन में दुःख, अशांति और अराजकता ही फैल जाती है। विवाहोंपरांत किया हुआ प्रेम परिवार को विघटन के कगार पर पहुँचा देता है। मृदुला सिन्हा ने उदात्त, निस्वार्थी प्रेम की सराहना की है ।

विवाहपूर्व प्रेम संबंध :

'अतिशय' उपन्यास में रजनीश और शिवानी में प्रतिशोधात्मक प्रेम संबंध पाया जाता है। मगर अंततक वह अव्यक्त ही रह जाते हैं। यति दर्शनशास्त्र का रिसर्च स्टुडंट है और शिवानी उसके गुरु की इकलौती पुत्री है। रुप, रंग और गुण में अव्वल शिवानी शांत, निरीह स्वभाव के विद्वत्ता के पूजारी रजनीश के प्रति आकृष्ट होती है। इसलिए वह प्रथम प्रणय निवदेन करती है। सकारात्मक उत्तर पाने की आदी शिवानी रजनीश के नकारात्मक उत्तर से हिल जाती है। एक रुप सुंदरी को सामान्य आर्थिक स्थिति के रजनीश के द्वारा नकार देना उसे रास नहीं आता। उसके मन में प्रतिशोध का भाव उत्पन्न हो जाता है। पराजीत अभिमान से फुत्कारती शिवानी आवेष में रजनीश से कहती है, "मैं आपको वरण करती हूँ, आपसे ह विवाह करुंगी।"[3] रजनीश के ठंडे प्रतिसाद से शिवानी का अहं जागृत हो जाता है और प्रेम संबंधों की जगह प्रतिशोध ले लेता है। अपने प्रेमी रजनीश से प्रतिशोध लेने के लिए शिवानी धनाढ्य उद्योगपती यति से जल्दबाजी में विवाह कर लेती है।

विवाहपूर्व प्रेमसंबंध वर्तमान युग में अपनी सिढियाँ पार करते करते शारीरिक तौर पर भी स्थापित होने लगे हैं। विदेश में ऐसे संबंधों को बडी ही सहजता से स्विकार किया जाता है। पाश्चात्य प्रभाव के कारण हो या वर्तमान युवा पिढी की बदलती मानसिकता की वजह से वर्तमान समाज में प्रेम संबंधों में प्रेम संबंधों को लेकर नैतिकता, विश्वास तथा पवित्रता के मानदंड चुके है। नए मानदंड स्थापित हो रहे है। आज ऐसे संबंधों को पहले की तरह त्यौरियाँ चढाकर नहीं देखा जाता। जिसका कारण "पाश्चात्य सभ्यता, बढती हुई चमक धमक, नई शिक्षा, आधुनिकीकरण, सिनेमा, गर्भपात एवं गर्भनिरोधक साधन है।"[4] लेकिन इस प्रकार के संबंधों का विपरित परिणाम व्यक्ति के वैवाहिक जीवन पर होता है। इस विचार को मृदुला सिन्हाने अपने अतिशय उपन्यास में व्यक्त किया है। इस उपन्यास के नायक उद्योगपति यतिंद्रनाथ गोयनका के अनेक लडकियों के साथ विवाहपूर्व यौन संबंध पाये जाते है। अमीर बाप की बिगडी हुई औलाद यति अपनी संपत्ति के सामने सबको हेय, तुच्छ समझता है । यौवन के उन्माद में अनेक युवतियों से उसके यौन संबंध स्थापित हो जाते है। इसका दुष्परिणाम उसके वैवाहिक जीवन पर होने लगता है। अपनी रुपगर्विता पत्नी शिवानी के साथ वह अतृप्त रहता है। हमेशा

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 2
March - April: 2026

शिवानी के पिछे भागनेवाला यति खुद को शिवानी से बहुत दूर अनुभव करता है। जिस हद तक समर्पण भाव से प्रभावित प्यार की उसे अपेक्षा है उतना उसे पत्नी से नहीं मिल पाता। वर्तमान की गहन पीडा से उबारने के लिए यति अतित की सुखद स्मृतियों में खो जाना चाहता है। अपनी पत्नी से ज्यादा उसे अपनी प्रेमका की स्मृतियाँसुखद लगने लगती है। "उसे शिवानीके स्पर्श में उसके साथ बिताए गए सैकडों सहवास में वह मादकता नहीं दिखाई देती, जो ऋचा के प्रथम व अंतिम मिलन में उसे मिली थी।"[5]

यति के उसके कॉलेज जीवन की सहेली सोनिया के साथ भी प्रेम संबंध स्थापित हो जाते हैं। यति सोनिया को अपने आपसे दूर नहीं रख पाता। सोनिया का मदमाता यौवन, डरी डरी सी निगाहें, उसका अनजाना सहज समर्पण यति को तनमन से झंकृत कर देता है। उसी भाववेश में वह सोनिया को सहधर्मिणी बनाने का निश्चय करता है मगर किसी कारणवश बना नहीं पाता। पर सोनिया ने "जो चाह जगाई थी उसके शरीर में, जो चिनगारी जलाई थी, वह सुलगती चली जा रही थी।"[6] सोनिया का समर्पण प्या, उसकी अमितट चाहत वह शिवानी से चाहता हैं मगर शिवानी उसे समर्पित प्यार नहीं दे पाती इसलिए उनके वैवाहिक जीवन में दरा पड जाती है।

विवाहेत्तर प्रेम संबंध :

"भूमंडलीकरण के दौर में विवाह से यौनिकता विछिन्न हो गई है।... अधिकांश लोगों के जीवन में विवाहेतर संबंधों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ रही है।"[7] विवाहेत्तर प्रेम सुखी वैवाहिक जीवन में तणावपूर्ण स्थिति निर्माण कर देता हैं। कभी कभी यह तणाव इतना बढ जाता है कि संबंध विच्छेद होने की नौबत आती है। मृदुला सिन्हा ने अपने 'कथा-साहित्य' में इस समस्या को अधोरेखित किया है। 'अतिशय' उपन्यास में इस समस्या को बृहत रूप से चित्रित किया गया है। यति अपनी पत्नी शिवानी की सहेली शर्मिष्ठा की तरफ आकृष्ट हो जाता है, उसे चाहने लगता है। यति जितना शर्मीष्ठा के करीब लगता है उतना ही शिवानी से अलग होता चला जाता है। शर्मिष्ठा का यति के जीवन में प्रवेश करते ही शिवानी के पति यति के उन्माद भरे प्यार का अंत हो जाता है। शिवानी को दिल्ली में छोडकर शर्मिष्ठा के प्यार में पागल यति का हर वक्त बंबई भागना शिवानी को आहत कर देता है। शिवानी के अतिरिक्त अभिमान से ज्यादा शर्मिष्ठा का सामंजस्य यति को अपनी ओर आकृष्ट करता है। यह प्यार सारी हदें पार कर शरीरिक तौर पर पहुँच जाता है। जिससे शर्मिष्ठा गर्भवती हो जाती है। शिवानी को उन दोनों के संबंधो की भनक लगते ही वह पति को त्यागकर पिता के पास चली जाती है। पति के विवाहेत्तर प्रेम संबंधों से पत्नी मर्माहत होकर चली जाती है और एक सुखी वैवाहिक जीवन का अंत हो जाता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 2
March - April: 2026

निष्कर्षतः मृदुला सिन्हा ने मनुष्य के जीवन में उदात्त प्रेम को महत् स्थान प्रदान किया है। उन्होंने कही भी स्वार्थी अंधे प्रेम को उचित नही माना है। बल्की अंधा प्रेम किस तरह मनुष्य की दुर्गती का कारण बन जाता है इसका सटिक चित्रण किया है। यह भी दर्शाया है की, ऐसे संबंधों में व्यक्ती जिंदगी भर घुटन महसुस करता है। प्रेम संबंधों में त्याग और समर्पण ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिसे मृदुला सिन्हा ने अपने 'अतिशय' उपन्यास में चित्रित किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. डॉ. कुसुम अंसल, आधुनिक हिंदी उपन्यसासों में महानगर, अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1993, पृ. 123.
2. नरेंद्र मोहन, कहै कबीर सुनो भाई साधों, पराग प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1988, पृ. 33.
3. मृदुला सिन्हा, अतिशय, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, प्र.सं. 2003, पृ. 52.
4. डॉ. भैरुलाल गर्ग, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में सामाजिक परिवर्तन, चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद. प्र.सं. 1973, पृ. 88.
5. मृदुला सिन्हा, अतिशय, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, प्र.सं. 2003, पृ. 56.
6. वही, पृ. 162
7. प्रभा खेतान, बाजार के बीच बाजार के खिलाफ, प्र.सं. 2005, पृ. 24